Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 9

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-1

अध्याय-5 : आधुनिक विश्व में चरवाहे

भाग-1

घुमंतू चरवाहे और उनकी आवाजाही

निर्मल सिंह



Under CSR Support by ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. घुमंतू चरवाहे और उनकी आवाजाही
2. औपनिवेशिक शासन और चरवाहों का जीवन
3. अफ़्रीका में चरवाहा जीवन



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

घुमंतू चरवाहे और उनकी आवाजाही



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आधुनिक विश्व में चरवाहे



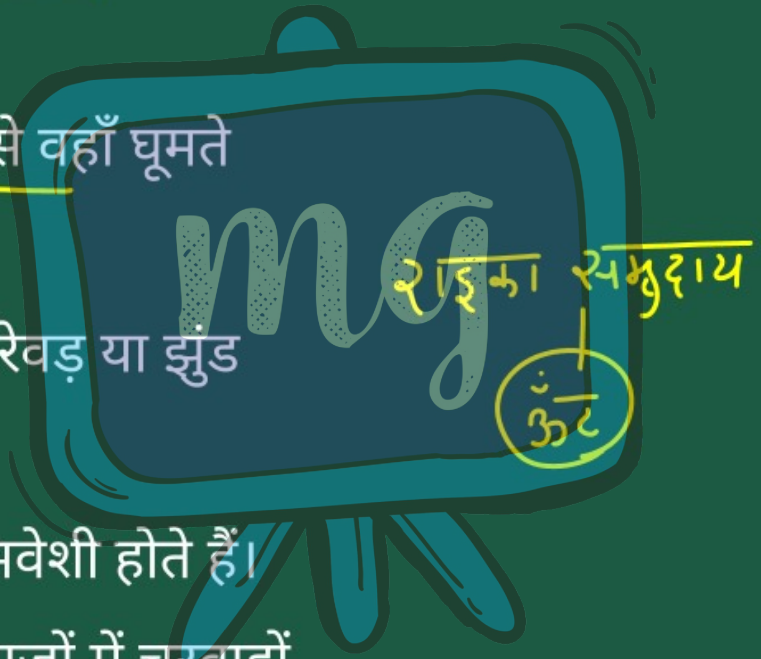
पूर्वी गढ़वाल के बुग्याल में चरती भेड़ें

- बुग्याल ऊँचे पहाड़ों पर स्थित विशाल प्राकृतिक चरागाह होते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- घुमंतू चरवाहे किसी एक जगह टिक कर नहीं रहते।
- रोज़ी-रोटी के जुगाड़ में यहाँ से वहाँ घूमते रहते हैं।
- इनके पास भेड़-बकरियों का रेवड़ या झुंड होता है।
- किसी के पास ऊँट या अन्य मवेशी होते हैं।
- भारत और अफ़्रीका जैसे समाजों में चरवाहों का बहुत महत्व है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

घुमंतू चरवाहे और उनकी आवाजाही

1. पहाड़ों में
2. पठारों, मैदानों और रेगिस्तानों में

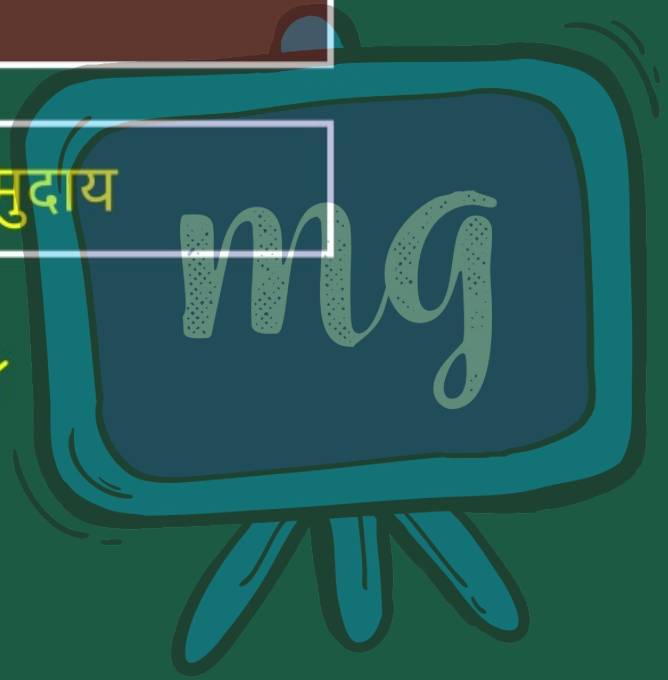


Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. पहाड़ों में

गुज्जर बकरवाल समुदाय



- जम्मू और कश्मीर क्षेत्र
- भेड़-बकरियों के रेवड़
- 19वीं सदी में आगमन
- चरागाहों की तलाश में
- सर्दी-गर्मी के हिसाब से चरागाहों में जाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जाड़ों में

सितंबर के अंत में निचली पहाड़ियों की शरण में चले जाते।

शिवालिक की निचली पहाडियों में डेरा डाल लेते।

सूखी झाड़ियाँ उनके जानवरों के लिए चारा बन जाती।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गर्मियों में

अप्रैल अंत तक उत्तर दिशा में जाने लगते।

पीर पंजाल के दर्रों को पार कर कश्मीर घाटी पहुँच जाते।

यहाँ उगने वाली तरह-तरह की घास से मवेशियों का पेट भर जाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



मध्य गढ़वाल के ऊँचे पहाड़ों में एक गुज्जर मंडप

गुज्जर गड़रिये बुग्याल में मिलने वाले रिंगल (एक तरह का पहाड़ी घास) और घास से बने मंडपों में रहते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

☛ 1850 के दशक में जी. सी. बार्न्स ने काँगड़ा के गुज्जरों का वर्णन किया –

- ✧ शुद्ध चरवाहा कबीले के लोग।
- ✧ खेती न के बराबर।
- ✧ गाय-भैंस पालते हैं।
- ✧ दूध, घी और मवेशियों से मिलने वाली चीज़ें बेचकर पेट पालते हैं।
- ✧ मर्द मवेशियों को चराते।
- ✧ औरतें सिर पर टोकरियाँ और कंधे पर हाँडियाँ लटका कर बाज़ार जाती।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गद्दी समुदाय

- हिमाचल प्रदेश का चरवाहा समुदाय
- मौसमी उतार-चढ़ाव के हिसाब से स्थान परिवर्तन
- पूरी गर्मियाँ लाहौल और स्पीति में बिता देते हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ऊन उतरने का इंतज़ार।

हिमाचल प्रदेश स्थित पालमपुर के पास उह्ल घाटी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

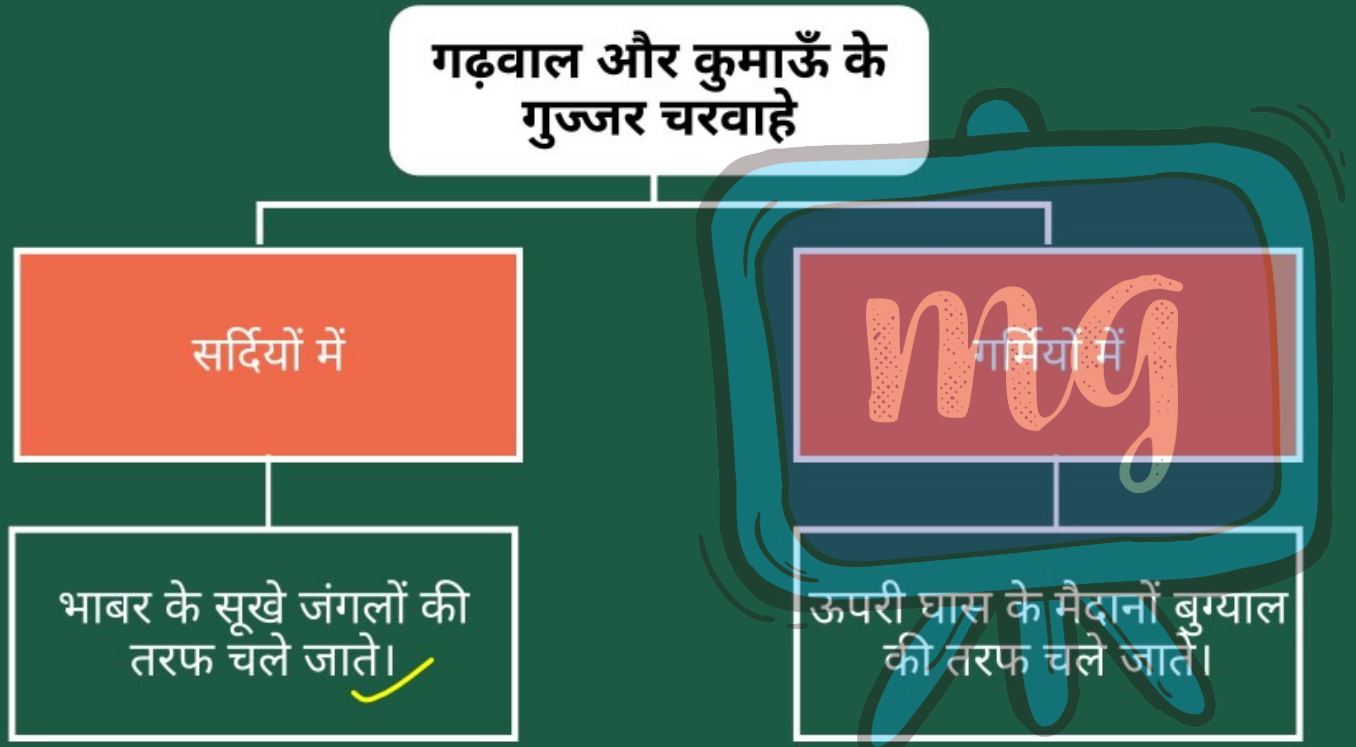
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



गद्दी भेड़ों की ऊन उतार रहे हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नए शब्द

भाबर : गढ़वाल और कुमाऊँ के इलाके में पहाड़ियों के निचले हिस्से के आसपास पाए जाने वाला शुष्क या सूखे जंगल का इलाका।

बुग्याल : ऊँचे पहाड़ों में स्थित घास के मैदान।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- हिमालय के पर्वतों में रहने वाले भोटिया, शेरपा और किन्नौरी समुदाय के लोग भी इसी तरह के चरवाहे थे।
- ये सभी समुदाय मौसमी बदलावों के हिसाब से खुद को ढालते थे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. पठारों, मैदानों और रेगिस्तानों में

- चरवाहे, पठारों, मैदानों और रेगिस्तानों में भी मौजूद थे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

धंगर

महाराष्ट्र का चरवाहा समुदाय

बीसवीं सदी में आबादी लगभग 4,67,000 थी।

अधिकतर गड़रिये या चरवाहे थे।

कुछ कम्बल और चादरें भी बनाते थे।

कुछ भैंस पालते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- धंगर गड़रिये बरसात के दिनों में महाराष्ट्र के मध्य पठारों में रहते थे।
- यह एक अर्ध शुष्क इलाका था।
- यहाँ बारिश कम व मिट्टी अनुपजाऊ थी।
- चारों तरफ कंटीली झाडियाँ थीं।
- बाजरे के अलावा कुछ नहीं उगता था।
- मानसून में यह पट्टी धंगरों के जानवरों के लिए एक विशाल चरागाह बन जाता था।
- अक्तूबर के आसपास धंगर बाजरे की कटाई करते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

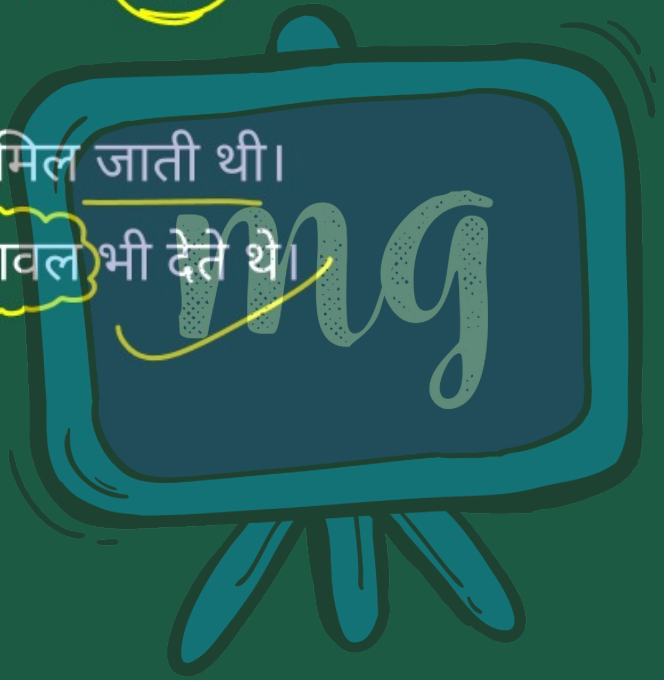
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- फिर चरागाहों की तलाश में पश्चिम की तरफ़ चल पड़ते थे।
- अपने रेवड़ों के साथ कोंकण के इलाके में डेरा डाल देते थे।
- कोंकणी किसान भी इन चरवाहों का स्वागत करते थे।
- क्योंकि कोंकण के किसानों को खरीफ़ की फ़सल काट कर अपने खेतों को रबी की फ़सल के लिए दोबारा उपजाऊ बनाना होता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- धंगरों के मवेशी खेतों में बची रह गई ठूँठों को खाते थे।
- उनके गोबर से खेतों में खाद मिल जाती थी।
- कोकणीं किसान धंगरों को चावल भी देते थे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

नए शब्द

रबी : जाड़ों की फ़सलें जिनकी कटाई मार्च के बाद शुरू होती है।

खरीफ़ : सितंबर-अक्तूबर में कटने वाली फ़सलें।

ठूँठ : पौधें की कटाई के बाद ज़मीन में रह जाने वाली उनकी जड़।

Under CSR Support by ipca | Foundation

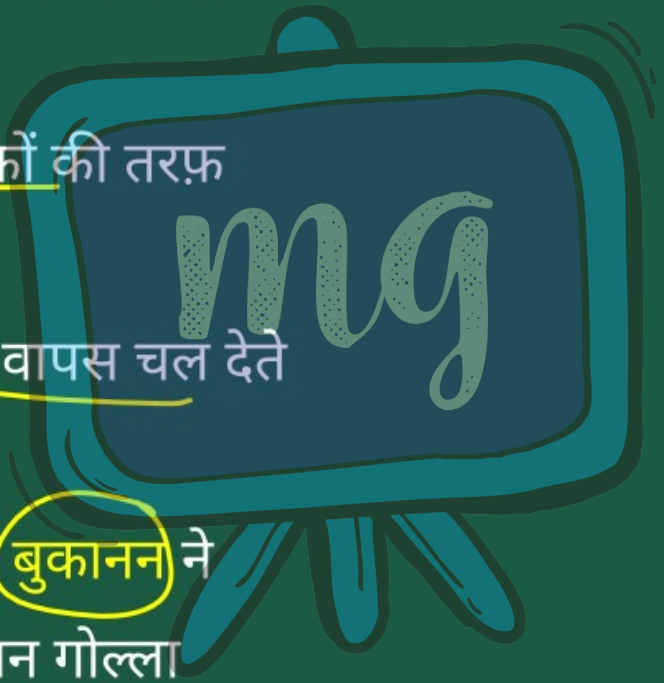
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में गोल्ला समुदाय के लोग गाय-भैंस पालते थे।
- जबकि कुरूमा और कुरूबा समुदाय भेड़-बकरियाँ पालते थे।
- ये हाथ के बुने कम्बल बेचते थे।
- पहाड़ी चरवाहों के विपरीत यहाँ के चरवाहों का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना सर्दी-गर्मी से तय नहीं होता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- ये लोग बरसात और सूखे मौसम के हिसाब से जगह बदलते थे।
- सूखे महीनों में वे तटीय इलाकों की तरफ़ चले जाते थे।
- जबकि बरसात शुरू होने पर वापस चल देते थे।
- उन्नीसवीं सदी के शुरूआत में बुकानन ने मैसूर की अपनी यात्रा के दौरान गोल्ला समुदाय का दौरा किया।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बंजारे

चरवाहों में एक जाना-पहचाना नाम

उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र

अच्छे चरागाहों की खोज में दूर-दूर तक जाते थे।

रास्ते में अनाज और चारे के बदले गाँव वालों को खेत जोतने वाले जानवर और दूसरी चीजें बेचते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

राइका समुदाय

- राजस्थान के रेगिस्तानों में रहता था।
- खेती के साथ-साथ चरवाहे का काम।
- बरसात में बाडमेर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर के राइका गाँवों में ही रहते थे।
- अक्तूबर आते-आते नए चरागाहों की तलाश।
- इनका एक तबका ऊँट पालता था।
- कुछ भेड़-बकरियाँ पालते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पश्चिमी राजस्थान के थार रेगिस्तान
में चरते राइका समुदाय के ऊँट

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



अपने ऊँट के साथ एक ऊँटपालक

यह राजस्थान में जैसलमेर के निकट थार का रेगिस्तान है। इस इलाके के ऊँट पालकों को मारू (रेगिस्तान) राइका और उनकी बस्ती को ढंडी कहा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पश्चिमी राजस्थान में बलोतरा स्थित ऊँट मेला

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पुष्कर का ऊँट मेला

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मारू राइकाओं की वंशावली बताने वाला

Under CSR Support by ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

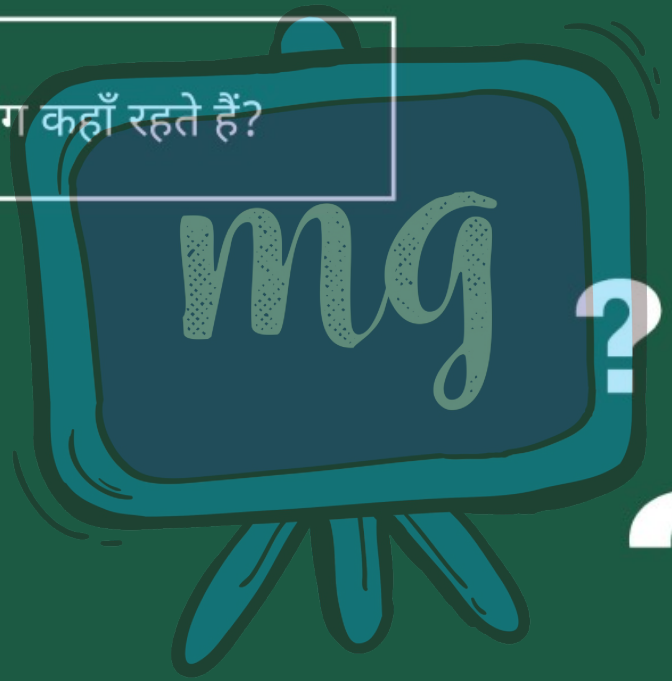
1 | भारत के विभिन्न चरवाहा समुदाय

2 | चरवाहों की आवाजाही



मूल्यांकन (Assessment)

1 | गुज्जर बकरवाल समुदाय के लोग कहाँ रहते हैं?



अ हिमाचल प्रदेश

ब उत्तरप्रदेश

स जम्मू-कश्मीर

द मध्यप्रदेश

2 राइका समुदाय के लोग ज़्यादातर किस पशु को पालते थे?

- अ गाय
- ब भैंस
- स ऊँट
- द बकरी



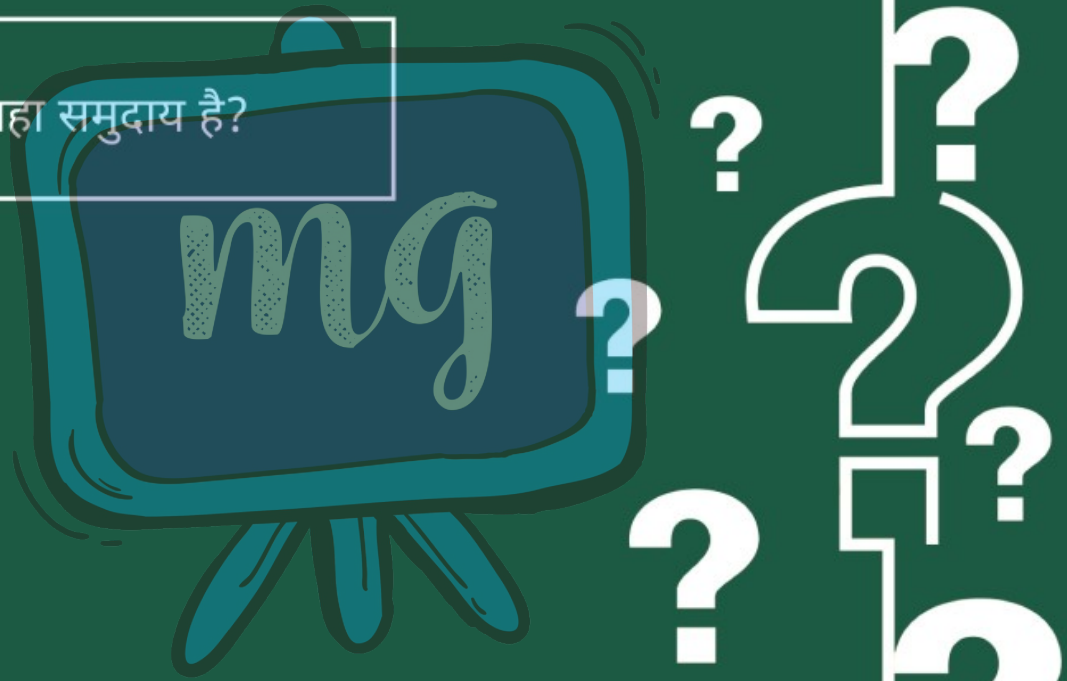
3 | महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण चरवाहा समुदाय है?

अ धगर

ब राइका

स गोरांग

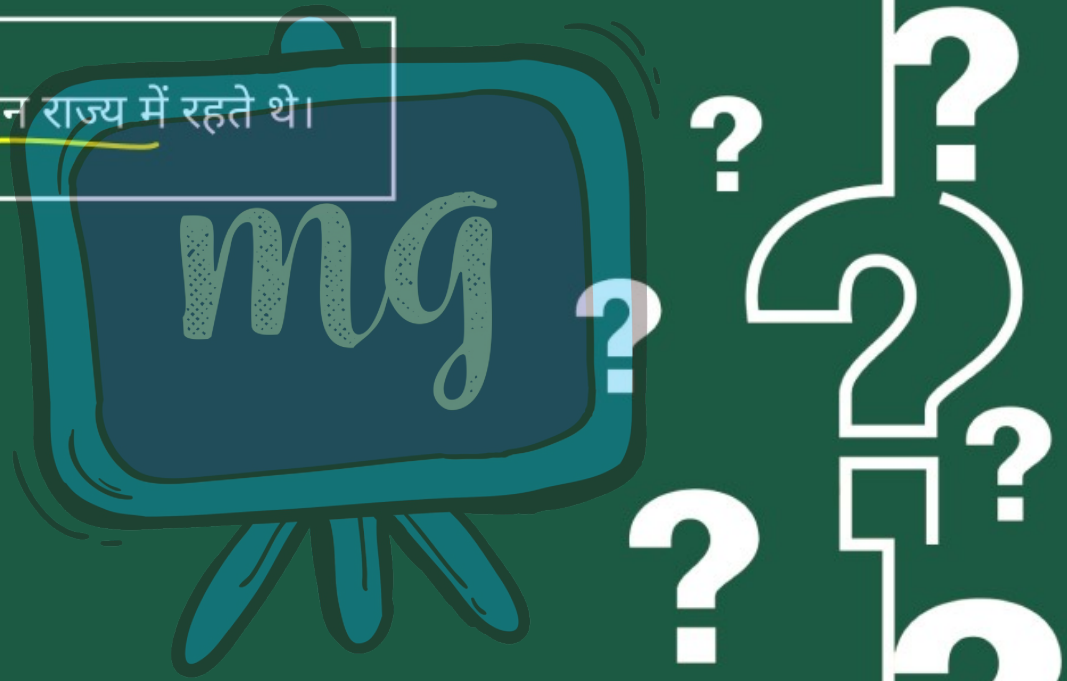
द गद्दी



4 | राइका समुदाय के लोग राजस्थान राज्य में रहते थे।

अ सत्य

ब असत्य



5 ऊँचे पहाड़ों में स्थित घास के मैदान ---------- कहलाते थे।

